अंतरा-शब्दशक्ति

काश! तुम आसमां होते

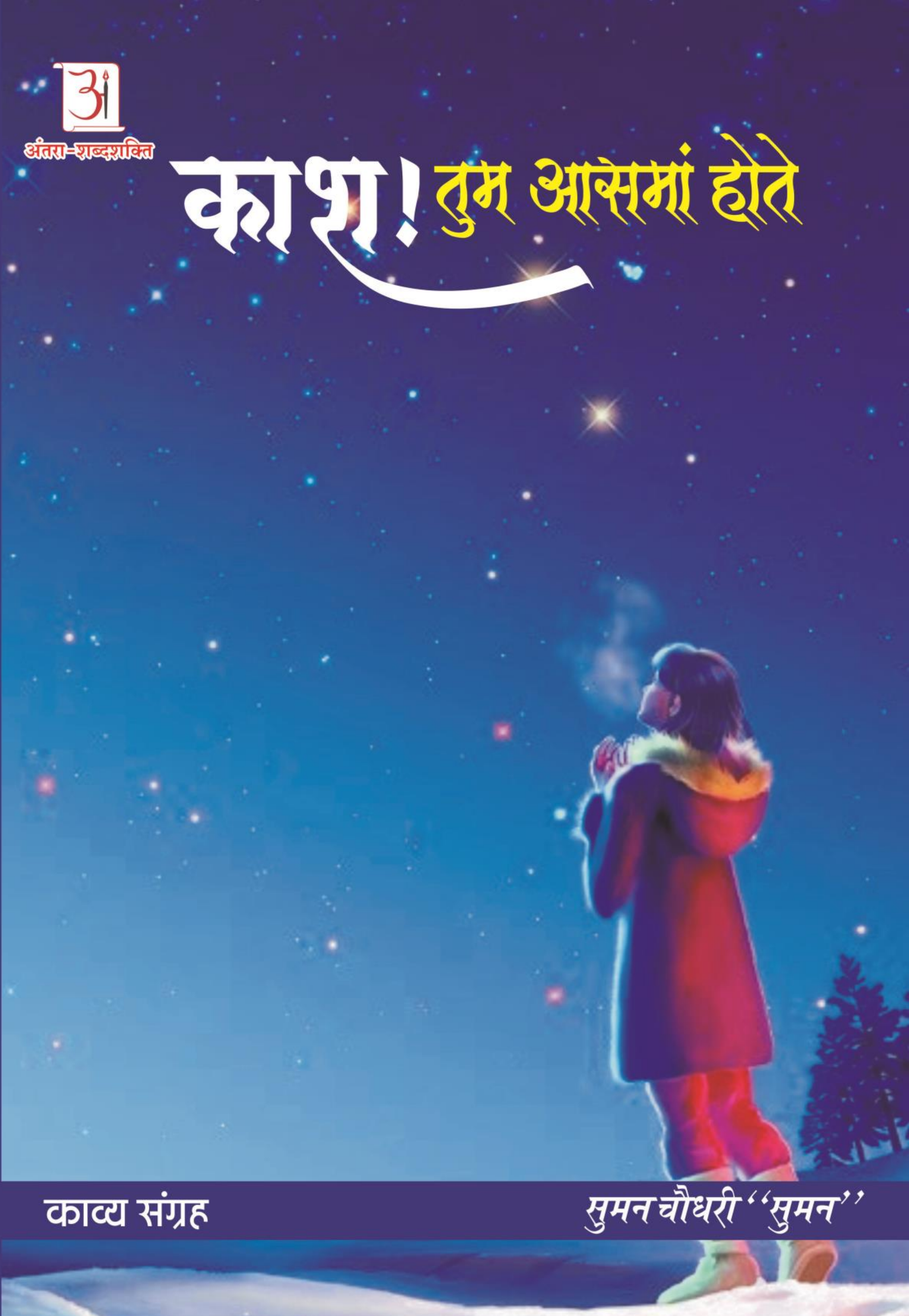

काव्य संग्रह

सुमन चौधरी ''सुमन''

काशतुम आसमाँ होते !

(काव्य संग्रह)

सुमन चैधरी ‘सुमन’

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-83-4

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चैक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ -सुमन चैधरी 'सुमन'

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

kash! tum asman hote,.. By Suman Choudhry Suman

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अपनी बात

मैं सोचती हूँ कि मानव जीवन एक कविता की तरह ही है, उसमें जाने कितने मोड़ आते हैं, सुख-दुख आते हैं, जो व्यक्ति को विभिन्न रसों की अनुभूति कराते रहते हैं। सामान्य जन उन्हें महसूस करके रह जाता है और कवि हृदय व्यक्ति उन भावनाओं को, उन उद्गारों को शब्दों में पिरो देता है, और कविता आकार लेती है।

मैंने अपने जीवन में, अपने आस-पास, जो भी देखा, महसूस किया और फिर उन्हें शब्दों में पिरोया, उनमें से कुछ रचनाएँ इस काव्य-संग्रह 'काश! तुम आसमां होते' में संग्रहित की है, अपने स्नेही पाठकों से मुझे आशा है कि 'नेता टिकट' और 'गिरगिट' (व्यंग्य संग्रह), 'चाय-पानी जिन्दाबाद' (व्यंग्य संग्रह) एवं 'टैरस पर टंगी जिंदगानी' (काव्य संग्रह), 'वह मेरी कोई नहीं थी' (लघुकथा संग्रह) की तरह आप इस संग्रह को भी उदार मन से स्वीकार करेंगे और मुझे मेरी कमियों से अवगत करायेंगे। आपकी प्रतिक्रियाएँ मुझे प्रोत्साहित करेंगी।

परिवार के सहयोग के बिना सृजनात्मक कार्य असंभव है, अतः अपने परिवार एवं रचनाओं के प्रथम पाठक जीवनसाथी डॉ. अशोक चैधरी की आभारी हूँ। मैं अंतरा शब्द शक्ति की प्रकाशिका

डॉ. प्रीति सुराना के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मेरी रचनाओं को पुस्तक के रूप में सजाया, सँवारा।

अन्त में मैं अपने इस काव्य संग्रह- 'काश! तुम आसमा होते' को अपने सहृदय एवं सुविज्ञ पाठकों को, अपार हर्ष के साथ सौंप रही हूँ कि उनका स्नेह और मार्गदर्शन मुझे सदैव मिलता रहेगा।

-सुमन चैधरी 'सुमन'

अनुक्रमणिका

1.जो बीत गया, सो बीत गया 7
2. औरत 8
3. जिन्दगी क्या है? 9
4. मैं गंगा बोल रही हूँ,.. 10
5. बचपन 11
6. मैं क्या लिखूँ 12
7. देश की शान-हिंदी 13
8. एक उलझी-सी पहेली 14
9. मैं एक बदली! 15
10. वह लड़की 16
11. ऐसा शिक्षक दिवस मनाएँ 17
12. मधुमास 18
13. अब तो चेत जा मानव 19
14. हम और तुम 20
15. माँ, तुम केवल माँ हो 21
16. मौसम 22
17. काश! तुम आसमाँ होते 23
18. विरहन 24
19. संवेदनाओं से रीता तो नहीं हूँ 25
20. आज़ाद हैं हम 26

21. गीली मिट्टी सी महकूँ 27
22. अकेला 28
23. अहम 29
24. अब हवा की बारी है... 30
25. रक्षाबन्धन 31
26. सर्दियों की धूप 32

जो बीत गया, सो बीत गया

जो बीत गया, सो बीत गया
अब क्या होगा, उसको गुनने से
यूँ, बार-बार सिर धुनने से
माना कि आसमान में एक दिलकश तारा था
जो तुमको बेहद प्यारा था
पर टूट गया, सो टूट गया
अब क्या होगा, बीती बातों को दोहराने से
यूँ ही बार-बार अकुलाने से
उठो! तुमको किसने रोका है
अपने मन की करने से
सपने बुनकर दुनिया में खुद को साबित करने से
बस, खुद को पहचान ले तू!
मन में एक धुन ठान ले, तू!
कौन रोक सका है?
सूरज को जग में आने से
तम को तो जाना ही होता है
उसके आने से।

औरत

मैं एक माँ, बहन और बेटी हूँ,
पर तभी तक, जब तक मैं घर में हूँ
जैसे ही मै घर की चैखट लाँघकर ,
बाहर निकलती हूँ, तो मुझे,
औरत मे तब्दील कर दिया जाता है,
और फिर मुझे लगता है,
जैसे मैं एक डरावने जंगल में खड़ी हूँ,
जहाँ हिंसक नजरें मेरा पीछा करती हैं,
कभी मुझ पर तेजाब डाला जाता है,
तो कभी दहेज के नाम पर मेरी बलि चढ़ाई जाती है,
कभी बसों में, कभी कारों में, मेरी अस्मत को रौंदा जाता है,
वैसे, मैं देवी भी कही जाती हूँ,
पर! तभी तक, जब तक मैं मंदिर में स्थापित रहती हूँ ,
दुनिया में तो मुझे ‘औरत’ का दर्जा जाता है
और शायद यही, मेरा गुनाह है,
तभी तो मुझे कभी गर्भ में ही,
तो कभी जिंदा ही, जीते जी मार दिया जाता है
किन्तु! अब यह ‘औरत’ चंद सवालों के जवाब चाहती है,
जो भोगी है, इस ने पीड़ा, उस का हिसाब चाहती है।

जिन्दगी क्या है?

जिन्दगी क्या है?
जिंदगी, एक जद्दोजहद
कुछ पाने की ललक
कुछ खो जाने की कसक
चाँद को मुट्ठी में भरने की धमक
तारों को आँचल में टाँकने की खनक
हौंसलों के पँखों से,
आसमाँ में उड़ने की सनक।
हाँ माना कि,
जिंदगी एक जद्दोजहद ही सही,
पर हमें भी है, कुछ पाने की जिद
जिंदगी के साज पर,
सुरीली धुनों को
गुनगुनाने की जिद
जिंदगी से
जिंदगी के खूबसूरत लम्हें को
चुराने की जिद
इन्द्रधनुष को यूँ ही,
धरती पर उतार लाने की जिद
फिर! क्यूँ न हो,
जिंदगी एक जद्दोजहद ही सही।

मैं गंगा बोल रही हूँ,..

मैं गंगा बोल रही हूँ
खामोश थी बरसों से, अब अपने लब खोल रही हूँ
बहती थी कभी कल-कल, अविरल,
नाज था अपने उफान पर
विस्तृत थी मेरी छाती, मेरी बाहें
पर तुमने, उ
नको विदीर्ण कर डाला
माँ की ममता लुटाई, मैंने तुम पर
पर, तुमने मेरा ही आँचल मैला कर डाला
पूजा के फूल चढ़ाते-चढ़ाते, मुझे ही बेच डाला
पहाड़ों से, चट्टानों से लड़ती,
दुख सहती तुम्हारे लिये ही,
मैं स्वर्ग से आई
मोक्ष दिया तुमको और मोक्षदायिनी कहलाई
पर! अब मैं थक चुकी हूँ
उदासी मेरे तन-मन में है, छाई
हो सके तो अब भी चेत जा मानव
बस! अब कुछ अवशेष बचे हैं मेरे
वरना किस्से-कहानियों में ही सुना करोगे
कि धरा पर बहती थी कभी एक गंगा माई।

बचपन

बेफिक्र-मस्त, हर बात से बेखबर बचपन
याद बहुत आता है मुझको मेरा बचपन

वो, देर शाम तक गली-कूचों में खेलना
बात-बेबात पर दोस्तों से लड़ना-झगड़ना

और घर आकर माँ से मीठी-मीठी झिड़की खाना
वो, भरी दुपहरी में चोरी-चुपके कच्ची अमियाँ खाना

वो, खेतों की पगडंडियों पर चलना-इतराना
सब खो गया दुनियादारी में..पीछे छूट गए गाँव, खेत-खलिहान

अब तो बंद खिड़कियों से झाँकता है बचपन
याद बहुत आता है, मुझको मेरा बचपन।

मैं क्या लिखूँ

मैं गीत लिखूँ या ग़ज़ल लिखूँ
विरहा लिखूँ या श्रृंगार लिखूँ

ऐ! मेरी कलम,
तू ही बता कि मैं क्या लिखूँ

घर चलाने की मजबूरी में
बर्तन मांजते छोटू की कहानी लिखूँ

या दाने-दाने को मोहताज़, कर्ज में दबे
आत्महत्या करते किसान की कहानी लिखूँ

रोज़ एक नई निर्भया की कहानी
या गर्भ में मरती कन्याओं की कहानी लिखूँ।

आहत हूँ, मैं!
टूटने लगा है सब्र का पैमाना

मन करता है
कि अब मैं बगावत लिखूँ
और सिर्फ बगावत लिखूँ।

देश की शान-हिंदी

देश की शान है हिंदी
हमारी पहचान है हिंदी
एकता का परचम लहराती
सबको गले लगाती है हिंदी

मेरी धड़कन, मेरा अभिमान है हिंदी
देश का गौरव गान है हिंदी
ज्ञान का सागर खुद में समेटे
साहित्य का भंडार है हिंदी

मां की लोरी सी प्यारी
करोड़ों की दुलारी है हिंदी
फिर भी कुछ लाचार सी है हिंदी
राजनीति का शिकार है हिंदी

दिल से यदि इसे अपनाएंगे तो
सब भाषाओं में अग्रणी है हिंदी
विश्व पटल पर छाई
हमारी संस्कृति की पहचान है हिंदी।

एक उलझी-सी पहेली

मौत एक उलझी सी पहेली है
यह ना किसी की सखी-सहेली है
ना जाने, किसको, कब, किससे छीन ले
हँसते-मुस्कुराते जीवन को लील ले।
और फिर मैं सोचती हूँ अक्सर, आखिर मौत किसकी होती है?
उन बंद आँखों की या उन खुली आँखों की,
जिनके सपने, जिनकी नींदे, जाने वाला अपने साथ ले गया
मौत किसकी होती है?
उसकी, जो रात ही, अचानक इस दुनिया से चला गया
या उन मासूमों की, जिनका बचपन असमय ही अलविदा कह गया
मौत किसकी होती है?
जाने वाले की या उस बूढ़े होते बाप की
जिसके झुके कंधों को, जाने वाला और झुका गया।
मौत किसकी होती है?
जाने वाले की या रोती-काँपती, उस बूढ़ी माँ की
जिसकी आँखों का नूर ही चला गया।
हाँ! मैं जानती हूँ ज्ञानी-ध्यानी कहते हैं, आत्मा अजर अमर है
ज्ञानी-ध्यानी कहते हैं, शरीर मरता है, आत्मा नहीं
पर फिर भी, मैं सोचती हूँ अक्सर, मौत किसकी होती है
जो चला गया, उसकी
या जो तिल-तिल मरने के लिए जिंदा रह गया उसकी???

मैं एक बदली!

मैं एक बदली!
कुछ आवारा, कुछ पगली सी
जाना कहाँ है, मालूम नहीं
मंजिल कहाँ है ,मालूम नहीं
चल पडूँगी उस ओर
ले जाए, हवा का झोंका जिस ओर

जाने! क्या लिखा है तकदीर में मेरी
जाने! क्या रंग दिखाएगी नियति मेरी
क्या जाने! किस की प्यास बुझाऊँ
या, बिजली बनकर लोगों के दिल धड़काऊँ
कहीं! यहीं कहीं नभ में ना खो जाऊँ
या, बूँद बनूँ और सागर में खो जाऊँ
अपनी विवशता, अपनी बेचैनी किसे दिखाऊँ
मैं एक बदली!
कुछ आवारा, कुछ पगली सी।

वह लड़की

जाने कहाँ खो गई, वह मासूम-शरारती लड़की
हर बात से बेखबर, मुस्कुराती-खिलखिलाती
कच्ची अमियाँ तोड़ती-खाती वह लड़की
पिता की उँगली थामे, मचलती-रूठती

माँ के आँचल में दुबकती-सिमटती वह लड़की।
सुना, एक दिन अचानक, वह बड़ी हो गई
किसी की पत्नी, किसी की माँ हो गई
जिम्मेदारियाँ ओढ़ते-ओढ़ते बहुत सयानी हो गई।

यूँ ही आज जब वह खुद को ढूँढने चली
किंतु उसे केवल
वर्जनाएँ, परम्पराएँ और चन्द परछाईयाँ ही मिली।
जाने कहाँ खो गई, वह मासूम-शरारती लड़की।

ऐसा शिक्षक दिवस मनाएँ

गुरु ज्ञान का भंडार है,
महिमा उसकी अपरम्पार है।

ज्ञान मिला, संस्कार मिला उनसे हमें
पर हम उनको वो सम्मान कहाँ दे पाए।

किस्से-कहानियों में ही पढ़ते रहे एकलव्य को
जीवन में उसकी कथा ना उतार पाए।

गुरु का आदेश शिष्यों को शिरोधार्य था कभी
और जीवन गुरुओं का, शिष्य पर न्योछावर था कभी।

फिर शिक्षा का हुआ कुछ ऐसा, व्यवसायीकरण
देखते ही देखते बदल गए सारे समीकरण ।

आओ! हम सब मिलकर ऐसा शिक्षक दिवस मनाएँ
गुरु-शिष्य के पावन रिश्तों की कहानी फिर दोहराएँ

गर्व हो गुरु को, अपने शिष्यों पर
और गुरु का दर्जा फिर ईश्वर से ऊपर हो जाए

आओ! ऐसा शिक्षक दिवस मनाएँ।

मधुमास

लो आ गया मधुमास!
छा गया मधुमास,..
कुछ ऐसी छाई फिजा में खुमारी,
हवा भी जैसे गुनगुनाने लगी है,

खिल उठा फूल-फूल,
कलियाँ भी मुस्कुराने लगी हैं
मस्त-मस्त घूमे हैं भँवरे,
तितलियाँ भी इठलाने लगी है,

पीली-पीली चुनर ओढ़े सरसों रानी,
खेतों में, खलिहानों में बलखाने लगी है,
और कुछ ऐसी ली, मौसम ने ली अंगड़ाई,
कि तस्वीर भी उनकी बतियाने लगी है,

जाने क्या हो गया है आजकल,
लबों पर गीत-ग़ज़ल और रुबाई छाने लगी है,
पिया संग खेलूँगी अबकी होली,
सोच-सोच नई-नवेली-नार सकुचाने लगी है।

अब तो चेत जा मानव

मत मिटाओ मुझे, तुम इस बेदर्दी से,
क्या मिलेगा भला! तुम्हें इस दहशतगर्दी से
और मिटाकर मुझे, तुम खुद भी क्या जी पाओगे?
मुझे मिटाने की धुन में, एक दिन खुद ही मिट जाओगे!
मैंने तुम्हें फल-फूल और ढेरों संसाधन दिए,
और तुमने, मेरी ही आँखो मे आँसू भरपूर दिए।
तुम शायद भूल गये! पर मुझे याद हैँ, वे सारी बातें,
जब तुम मुझसे लिपटकर करते थे ढेरों बातें..।
तपती गर्म दुपहरी में,
जब तुम मेरी छाँव तले कच्ची अमियाँ खाया करते थे,
और कई बार तो माँ से रूठ, मेरे आँचल मे छुप जाया करते थे।
पर! अब तुम बड़े हो गये?
धन-दौलत की चकाचैंध मे इस कदर खो गये,
धरती माँ को ही तुमने नँगा कर डाला,
वृक्ष ही तो थे, वसन उसके,
तुमने उनका ही चीरहरण कर डाला,
अब तो चेत जा मानव! खतरा सिर पर मँडरा रहा है,
कही बाढ़ तो कहीं भूकम्प आ रहा है ,
और इस धन-दौलत का क्या करेगा ?
जीवन ही ना, जब शेष रहेगा, अब तो मेरी पीड़ा को समझ ले,
नादान!
और सहेज ले मुझको, क्योंकि मै हूँ, ईश्वर का वरदान।

हम और तुम

हम और तुम हो
और नदी का किनारा हो

कुछ मेरी कुछ तुम्हारी
कुछ मीठी, कुछ खट्टी सी बातें हो

कुछ बहकी, कुछ महकी सी
कुछ कही, कुछ अनकही सी बातें हों

बस यूँ ही
घंटों बतियाते रहें

वक्त का दामन, थामे-पकड़े
हवा की तरह बहते रहें

फूलों की तरह खिलखिलाते रहें

हाँ, बस! हम-तुम हो
और नदी का किनारा हो।

माँ, तुम केवल माँ हो

माँ तुम एक आस हो, मेरा विश्वास हो,
जीवन की आपा-धापी में सकून का अहसास हो।

तपते मरुस्थल में छाया का वास हो,
माँ, तुम्हारी गोद में जन्नत का आभास हो।

कैसे परिभाषित करूँ, तुमको माँ
कि तुम शब्दों से बड़ी हो।

नाजुक हो, पर मेरे लिये चट्टान सी खड़ी हो
मेरे जीवन की अनमोल कड़ी हो।

माँ, तुम केवल माँ हो,

इस जिंदगी में दुआओं की लड़ी हो।
मेरे लिये खुदा से भी बड़ी हो।

मौसम

मौसम ने ली करवट
और भी कमसिन-हसीन हो गई शाम

जाने क्या कहती हैं, यह बेकरार सी बूँदें
कुछ बावरी सी, कुछ मनचली सी बूंदे

महका कतरा-कतरा,
बहका-बहका सा है मन

इठलाती पत्ती-पत्ती
मस्त-मस्त है पवन

छलका-छलका खुशियों का जाम
जश्न-ए-बहारा के नाम
देता, मौसम यह पैगाम ।

काश! तुम आसमाँ होते

राधा, मैं बन जाती
ग़र, तुम कान्हा होते!

मैंने, कब तुमसे, कुछ मांगा था
पर, प्यार के दो बोल, तो बोले होते

और दूरियाँ भी मिट ही जाती
कुछ लम्हें तो साथ चले होते।

यूँ, ना डूबती साहिल पे कश्ती अपनी
ग़र, तूफानों से तुम टकराये होते।

मैं, धरती बन, राह तकती रही
काश! तुम आसमाँ बन गये होते।

विरहन

विरहन खोजत श्याम को
धरा खोजत घनश्याम को

दोनों की आस एक सी
दोनों की प्यास एक सी

सुने-सूने दिन हो गये
बैरन हो गई रतियाँ

दोनों के 'पी' बिसराय गए
निहारत दोऊ की अखियाँ

जतन कोई काम ना आवे
तरसत हैं दोऊ सखियाँ।

संवेदनाओं से रीता तो नहीं हूँ

मैं एक कचरे का डिब्बा हूँ,
बरसों से एक कोने में उपेक्षित निर्वासित-सा पड़ा रहता हूँ,
लोग आते हैं और मुझमें कचरा डालकर चले जाते हैं,
गंदगी उनकी और गंदा मैं कहलाता हूँ,
मगर, फिर भी मैं कुछ नहीं कहता,
जाने कितनी यादें, कितने वादे,
चिंदी-चिंदी मुझमें दफन किये जाते हैं,
पर! मैं, किसी का राज किसी से नहीं कहता,
किंतु एक बार हद हो गई
जब एक परछाई, रात के स्याह अँधेरे में
एक शिशु-कन्या को मुझमें डालकर चली गई
मैं सहम गया और मेरी आत्मा चित्कार उठी
जब वह मासूम चंद लम्हों में कुत्तों का निवाला बन गई
मैं सारी रात अपनी बेबसी पर आँसू बहता रहा
तब मैंने सोचा!
चलो! अच्छा है कि
मैं एक कचरे का डिब्बा हूँ, इंसान नहीं हूँ
कम से कम संवेदनाओं से रीता तो नहीं हूँ।

आज़ाद हैं हम

जान से प्यारा है हिंदुस्तान हमारा है
आजाद हैं हम,
हमें झुकना नहीं गवारा है ।
गोरों से तो आजाद हो गए हम
पर जंग अभी जारी है।
अशिक्षा, गरीबी, बढ़ती जनसंख्या
इस आजादी पर भारी है।
नरपिशाच खुले घूम रहे हैं
नहीं, सुरक्षित अभी तक नारी है।
अन्नदाता भूखों मर रहा है
आत्महत्याएँ अभी जारी है।
आओ! मिल-बैठकर विचारें
समस्याओं की जो दुश्वारी है।
हाँ, आज़ाद हैं हम
आजादी, हमें जान से प्यारी है।

गीली मिट्टी सी महकूँ

गीली मिट्टी सी महकूँ
गर, तुम बारिश की बूँदे बन जाओ

मैं फूलों सी निखर जाऊँ
गर, तुम बागबां बन जाओ

मैं नदियाँ सी कल-कल बहूँ
गर, तुम सागर बन जाओ

मैं दिल बनकर धड़कूँ , सीने मे
गर, तुम मेरी धड़कन बन जाओ

मैं तुम्हारे ही रंग में रंग जाऊँ
प्रियतम! गर तुम मेरे हो जाओ।

अकेला

ग़म ना होते तो गौतम ना होते
रातें ना होती तो कहाँ होते उजाले

ग़मों का सिलसिला है इतना अजब
भीड़ में भी रहता है, आदमी अकेला।

देखो! चाँद भी है, तन्हा-तन्हा
और घूमता है सूरज भी अकेला

घूमती है दुनिया, उसके आगे पीछे
ग़मों से पार पाता है जो अकेला

अकेला ही आता है दुनिया में हर कोई
और 'सुमन' जाता भी है अकेला।

अहम

यूँ ! तो कोई वाद नहीं था
बस,
हम में, संवाद नहीं था।
कुछ हम नाराज,
कुछ तुम खफा-खफा से थे
ऐसा नहीं, कि विश्वास नहीं था।
कुछ तुम ठिठके,
कुछ हम झिझके,
पर, झुकने को कोई तैयार नहीं था।
और, बातों-बातों में
इस कदर बात बिगड़ी
कि समझौते का,
कोई सूत्र हाथ नहीं था।
एक-दूजे के पहल की आस में जीते रहे
पर, जीने का कोई एहसास नहीं था
और जब चुप्पी की
यह बर्फ पिघली,
तो जाना!
वो! केवल अहम था,
मुद्दा, कोई खास नहीं था।

अब हवा की बारी है...

पानी बिका, मिट्टी बिकी,
अब हवा की बारी है,
कुछ ऐसा विकास हो गया
अब आसमाँ की बारी है।

चाँद भी है, कुछ थका-थका सा
चाँदनी का दिल भी कुछ भारी है,
सूरज भी अपनी ताब खो बैठा
प्रदूषण की पूरी तैयारी है।

धरती बिकी, इंसानियत बिकी
लगता है, किसी बड़े सौदे की की तैयारी है।
कर सकते हो, जितना दोहन कर लो।
प्रकृति की भी, बदले की पूरी तैयारी है...।

रक्षाबन्धन

रक्षाबंधन का त्यौहार है आया,
पर, भाई अभी तक नहीं आया,
दुनिया सारी चहक रही,
पर बहना का जी है घबराया,
राह देखते-देखते थक गए नैना,
ना कोई चिट्ठी, ना कोई संदेशा आया।
हाँ, आया तो था भाई छुट्टी पर,
किंतु, सीमा पर छिड़ गई जंग और तुरंत फौज से बुलावा आया,
जाते-जाते बोला था उसने
'भारत माँ पुकार रही है, पर मैं लौट कर आऊँगा
तुझसे राखी बधँवाऊँगा !
पर रात हो गई, भाई अभी तक नहीं आया
उदास हो गई बहना, कुछ ना उसे सुहाया।
खूब लड़े फौजी और देश का परचम लहराया।
अचानक, एक दिन घर लौटा भाई
और बहना से कलाई पर धागा बँधवाया
फिर बोला-बता क्या चाहिए तुझे रक्षाबंधन पर
तो रोते-रोते बहना बोली-भाई!
तूने देश के प्रति अपना फर्ज निभाया
और हम बहनों का मान बढ़ाया
भाई ही तो उपहार बहन का
और तेरे रूप में, मैंने दुनिया का बेशकीमती उपहार है पाया।

सर्दियों की धूप

सर्दियों की धूप सी गुनगुनी वो बातें
मुझे आज भी याद हैं, वो मुलाकातें
जब हम मिलकर घंटों खिलखिलाया करते थे
बात-बेबात पर रूठा और मनाया करते थे

जाने कहाँ, खो गए वो पल-छिन
अब तो हालत यह हो गई है कि,
दोस्तों से मिलने का बहाना ढूँढना पड़ता है
सब कुछ है पास में, बस कमबख्त वक्त ही नहीं मिलता है,..

जिंदगी कैद होकर रह गई है,
जैसे एक कबूतर खाने में
जहाँ गुटर गूँ-गुटर गूँ के सिवा
कुछ सुनाई ही नहीं पड़ता है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - सुमन चौधरी, 'सुमन'

जन्मतिथि - 3 जुलाई

शिक्षा - पी.जी. डिप्लोमा इन मास कम्युनिकेशन, एम.ए.

मो. नं. - 9412815939

ई मेल - ch.sumanashok@gmail.com

संप्रति - स्वतंत्र लेखन एवं सामाजिक कार्यकर्ता विधाएँ- कहानी, कविता, व्यंग्य, यात्रा संस्मरण आदि। विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में रचनाओ का नियमित प्रकाशन, आल इंडिया रेडियो, आकाशवाणी से कहानी, कविताओ और वार्ताओं का नियमित प्रसारण।

पद - उप संपादिका- कल्याणी पत्रिका, रिपोटर मेल पत्रिका,
पूर्व जिला प्रभारी- ग्लोबल इंडिया पत्रिका, मुरादाबाद
संपादिका - विदूर भूमि, बिजनौर

प्रकाशित पुस्तक - नेता टिकट और गिरगिट (व्यंग्य संग्रह), चाय-पानी जिंदाबाद (व्यंग्य संग्रह)
टैरस पर जिंदगानी (काव्य संग्रह), वह मेरी कोई नहीं थी (लघुकथा संग्रह)
बाजी (कथा संग्रह), यात्रा संस्मरण (प्रकाशनाधीन)

सम्मान - साहित्य एवं समाज सेवार्थ 2018- उत्तर प्रदेश सरकार
महिला साहित्य सृजन सम्मान 2018 मेरठ, वुमन आवाज सम्मान 2018 (म.प्र.)
नारी शक्ति एवार्ड 2018 - लायंस क्लब डिस्ट्रिक्ट 321-सी-1,

सामाजिक क्षेत्र - श्रमजीवी पत्रकार यूनियन बिजनौर।
परिवार परामर्श केन्द्र में सराहनीय कार्य हेतु पुलिस अधीक्षक बिजनौर 2016
महिला शिक्षा सुरक्षा सम्मान 2015 उ.प्र. सरकार।
महिला सशक्तिकरण अवार्ड - अखिल भारतीय राजीव गांधी मंच 2013,
अंतर्राष्ट्रीय रोटरी अवार्ड - बाल मृत्यु दर की रोकथाम कार्य हेतु 2013

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-83-4

मूल्य 55/-